

DPN 6625

गोरक्षनाथ मंत्र GORASANĀTHA MANTRA

Title :

Run. No. 7350

Cat. No.

Micro. No.

Subject मन्त्र Mantra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 19.8 x 9.5

Folios 7 (10-24)
Lines (in a page) 6
Missing - 1-10, 11-17, 20,
Chapt. / act /

Compl. / Incompl.

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

इति श्री पंचसिद्धोक्तपुट समाप्तं शुभम् ॥ (Fl.-10)

P.T.O.

इति श्री गोरक्षना (ध) का मात्रा समाप्तं सुभं न ॥ (Fl.-19)

न होताः एतन्नि होचंद्र ॥ ॥ श्रीगुरुगोरखवाच ॥ एतन्नि होती दिन का
होताः आये यवन सुन आह्वरं ॥ गनयिरतिटुटीनीद्रासादीः आदवद
रं ॥ ॥ श्रीगुरुगोरखवाच ॥ काहंवैसेमनः काहंवैस्य यवन ॥ काहंवै
सेशवडः काहंवैश्यचंद्र ॥ ॥ श्रीमहेंद्रोवाच ॥ दयावैसेमनः नाभि वै
स्य यवन ॥ रूपवैसेशवडः गगनवैश्यचंद्र ॥ ॥ श्रीगुरुगोरखवाच ॥ ह
दयानि होत करताः मननि होता कावस्ता ॥ कौनवकुलः पुत्रका कौन

महं ॥ आदि का कौन गुनु अना ड है ॥ धरनिका अमर
कौन भरताः सुन का व कुल ॥ मन प्रवेत कोः अलेख चार ॥ श्रीगुनुगोरख
वाच ॥ मन यौन काः कौन आहाल ॥ ग्यान का कौन मुद्रा सा दी ॥ श्रीमहं
१० वाच ॥ अरी कौन मुलः सुन का कौन मुल ॥ मन का कौन नीरं व सा ॥ नेत्री १०
गुरु कथं तः कुसद का कौन ग रा सा ॥ सुसीद का कौन वा साः द्वादसि अंगुर
॥ कोई गुनु मुख रया वा सा ॥ श्रीगुनुगोरख वाच ॥ आदि का कौन गुनुः धर १० गोर

माथे टोपि सीर प्रजटा ॥ वरम कयाली ले फिरे सिदा ॥ आफ सत गुनु व
ले गि सा ता ॥ नागा रं नागाः कौन तु नागा बोली जे ॥ कौन बोली जे नाग वंद
कौन बालि जे कुवा श ॥ कौन देई दू की बोली जे ॥ कौन देई है उघा श ॥ ज
तोत नागा बोली जे ॥ सत् बोली जे नाग वंदः कह र तो कुहा श बोली जे
॥ पुं भु आत माद कि बोली जे ॥ यौन पुरु स्का दो है उघा श ॥ वंद है वन
वा सा शत कि को पनी ॥ संतो का ता गाः देव दत्त अवधुत है नागा ॥

नाथ ॥ नागायैरै नागकनी हनुमानयैरेलंगोटि ॥ इति श्रीपंचसिधोकापु
टसमाप्तं शुभम् ॥ ॥ ॐ नमो ॥ श्रीगोरखनाथमन ॥ ॐ नमो आ
१८ देसगुरुजिकों ॥ नाथ कहै सरे कठत्रयंथ ॥ जियत्रिदीगयोवंद
जोजोगीसमाई ॥ जोगजुगतमैरयासमाई ॥ सिरभद्रकराई नवघंडपु १८
थमप्रतामगोभिय ॥ नीरंवरयासमाई ॥ जोगिगननाडकादेजुमुद्रा
॥ औतहाटगलायैरुषंता ॥ औटकुरेईनागा ॥ वंदसुरजदोथगला नाथ

पैल्यः गुनुप्रतावेदात्रे ॥ पंचत्रीदीकरेकसोत्ता ॥ सोनानुयासंसारकं
देना ॥ जेलीपत्रअनंटकोटसिधोन्येत्तागा ॥ जेलीपत्रयंकाधारिस
तगुनुलेविचारि ॥ कुवाडिः फावडितं गुमित्रीटिया ॥ डिठावणि ॥ म
डामसांठां ॥ गुनुगोरखनाथलेजगाउली ॥ धरोवील्लहैत्रिकेअवतारं
॥ मारोभिरगाः भगसोमास ॥ उसकेकरोसेलीः सिंगिजगंनाथ ॥ यधंते
गुणांते सुनंते ॥ फरंते ॥ इति श्रीगोरखनाकामात्रासमाप्तं शुभम् ॥

नाथ २ॐ नमः श्रीगुरुगोरवनाथ॥ जिकीमोलीजामैवलंगाः नाहाआदे
मिजोलिः ज्यामेथिंताउगाजेलिः गोदिपरहातदारेगाः ज्यामिलिजाये
गाः जोमैसमाउगाजेलिः नववैकुंथजायेगाः यदमसुषयावैगा॥ ईति
१२ जेलिका मंत्रसुभंम् ॥ १ ॥ ॐ श्रीगुरुगोरवनाथजि॥ आव आवयावति १२
जिः महादेवजिलेः तुंवासमानाः जतनाः दसनाम् संन्यासिः वारयथजो
गीः गोरवनाथजिनेः महादेवजिसैः तुंवाकेवास्तेरलैहैः यावतिनेक नाथ

ह्याजिकोकानधिर्नलागे॥ ईतिगुरुवावस्त्रकोमंत्रसुभंम् ॥ ६॥
ॐ नमोऽग्रादेसगुरुजिकुं॥ सतनाथवर्माः संटोषनाथवृक्षुः गजवी
रिगजघंतनाथः अचलचंदेनाथः मायारूपिमहिंद्रनाथः घटेपिडेः
गिरंनरेलकाकरेगुरुगोरवनाथः वालाठजरजोनिग्यानपारषिरो
रंगिनाथजिनाम्॥ ईतिवहंतुथनेका॥ ॐ नमोऽग्रादेसगुरुजिकुं॥
॥ सुनकालीगः चोडिकाधाराः धतिमाईनंमकुंः नमस्कार॥ ईतिपा

नाथ राधिसायकामंत्रसुभंम् ॥ ८ ॥ ॐ नमो ४ आदे स गुरुजीकुं ॥ कानकुड
लः गले हारः सिर्क गुरुपिर आदे स आदे स् ॥ इति द्रसन कामंत्रसु
भंम् ॥ ९ ॥ ॐ नमो ४ आदे स गुरुजीकुं ॥ गादेः चंदेः नाडे सुहुः नाद
रहै घट पिनेः भरयुहुः नाड क हा काः ये षा नाः विदु क हा का राहुः
विदे जोगिः नाड व जा वैः ष ज भोर जनः अमृति फर यो वैः विसुपर
लोक कुं जा वैः घन्य पुस्त कि मालाः जटि गुरु गोर ष नाथ जी वा ला ज

२१

नाथ

ति नाड कामंत्र परै वै कुं ठ कुं जा वै ॥ इति नाद कामंत्र नाद व जा वै ३
॥ १० ॥ ॐ नमो ४ आदे स गुरुजीकुं ॥ धुनिया निया नीः सिंधु कि वा नि
सिर्क वः कलि जुग मध्य औ सार हु नाः आयु द ये नाः कान सु नाः सुष
सै कु दु न हि क हु नाः ऐ सं सार सा गर किः का ठ कि वा रिः का टा वि ना
का टा नि क लेः कु चि वि ना नः तारा नि क लेः उ घर वै थ के दे षे त माः
साः ना वै कुं दे मा याः सु न गु न व ताः सु न हु न व ताः ॥ इति धुनिका

नाथ मंत्रसुभंम् ॥११॥ ॐ नमो ४ आदे स गुरु जीकुं ॥ श्रीनाथ जीका सत
युरः नाटवाजैः कालभागेः गोरवनाथ पिजये साजैः जये जोगिजा
नैः नाडविंदका भेदः उसघर किरक्षा करैः अदरिच उरंगिः श्री
संभुजनिगुरु गोरवनाथ जिकेः रउरासुषासुः द्वित्रमैत्रलासुः पिरा
नपिसोरमदानः श्रीगोरवः घनरिसिद्धकोः आदेस सादेसः संज्या
तारिनीः सर्वदुषनिवारिनीः दिपकजलेः विषनरैकालिकाः कार

भंजनैः अवतसक्तिमहंसाई रक्षा करैः ये मत्र पटे द्यपकजलई
स्वरनमस्कारः ॥ ईति दिपकामत्रसुभंम् ॥१२॥ ॐ नमो ४ आदेसः
गुरु जीकुं ॥ सेलिसंटाः रिगुनसागः जोगिगंथैयायुतागाः ननसेली
गलविचरायोः साहासाहामिगैः जोगिमारेः धर्मगममर आसनधरेः
अवल आसनः पलकनचलैः जुगुवानंदै जोगिभक्तैः निनकुरिकु
टकाः ब्रह्मग्यानः रामनाथोर्तिपरमानः द्वादुनिगयोनिस्तं नृपिवैः जु

नाथ

टाजोगिजुगजुगजिवैः अरं वंनसिलकोपिनिः अत्र परजोगिगाउलि
निः नाडविंदके घरमे रहैः जोगजुगुताः जोगिरहैः धनगरिवकुमकु
मनसायतरैः आवतत्रह्मी अमयदारः टामिर्त्रिपरटापजराउंः सोई
वभुनमस्तकवधाउंः आकासविरितैमिक्काकरैः भोक्कैहैः मागनजाउं
फरुवाः फिरुवाफिनराधैः करमाई अंठघरमनमैधिरधरेः कसुकस्
कमरुः अभुंकुधसनाः ॥ इति सेलिका मंत्र सुमंम ॥ १३ ॥ ॐ नमो ४ आदे

२३

२३

नाथ

सगुरुजीकुं ॥ सप्रयोंतारैमै यातालः दयादुकाभुरिजैः कचप्रमयः मव
परधुहधुहपरलाईः लाईपरः श्रीसंभुजनिगुरुगारयनाथजिलेः नो
षंडप्रथमैठहराईर्धतिमातानमोनमस्कारं ॥ इतिर्धतिमैधाउनामंत्र
सुमंम ॥ १४ ॥ प्रथममातार्धतिः ॥ ॐ नमो ४ आदे सगुरुजीकुं ॥ यैरेधु
यगुरुकुंदिजेः करजोलिपरनामकिजेः दुस्राधुयसिवसक्तिकोदिजेः
टिसराधुयत्रिनीलोककुंदिजेः चौठाधुयचारदिसाकुंदिजेः अठारभा

नाथ

राकुंदिजेः पंचवाधुयः पांचमहेस्वरकुंदिजेः दंतो धुंयः सतद्रसनकुं
दिजेः हेईथुवाधुयद्वजतिनारायनकोदिजेः सावाधुयसातरकोदी
जेः आठुवाधुयअस्तमैईरवकुंदिजेः नौवाधुयनवदुरुगाकोदिजेः
दसवाधुयः दसनामकोदिजेः ऐघारुवाधुयः श्रीराजारासचंद्रकुंदिजेः
वाधुवाधुयश्रीगुरुगारवनाथजिकुंदिजेः करजोरिपरनामकिजेः

॥ ईतिधुयकामंत्रसुमम् ॥ ॥ योमंत्रगुप्तमन्त्र ॥ ॥ ॐ ॥

नाथ